तारामीरा

तारामीरा सभी क्षेत्रों में पैदा किया जा सकता है इसको अनुपजाऊ एवं अनुपयोगी भूमि पर भी बोया जा सकता है। इसमें तेल की मात्रा लगभग 35 प्रतिशत पायी जाती है।

कृषि पारिस्थितिक स्थितिवार किस्में

ए.ई.एस–।	ए.ई.एस–।।	ए.ई.एस–।।।	ए.ई.एस–IV
	आर.एम.टी–314		

उपयुक्त किस्में –

आर एम टी – 314 बारानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 12–15 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तथा पकाव अवधि 130–140 दिन है। इसमें 36.9 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है इसके हजार दानों का वजन 3–5 ग्राम व इसकी शाखाएं फैली हुई होती है।

भूमि का चुनाव – तारामीरा हेतु हल्की दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है। अम्लीय एवं ज्यादा क्षारीय भूमि इसके लिये बिल्कुल उपयोगी नहीं है।

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार – तारामीरा की खेती अधिकांशतः बारानी क्षेत्रों में, जहां अन्य फसल सफलता पूर्वक पैदा नहीं की जा सकती हो, वहां की जा सकती है। खरीफ की चारे, उड़द, मूंग, चंवला, मक्का, ज्वार आदि की फसल लेने के बाद यदि नमी हो, तो एक हल्की जुताई करके सफलता पूर्वक इसे बोया जा सकता है। जहां तक सम्भव हो वर्षा ऋतु में तारामीरा की बुवाई हेतु खेत खाली नहीं छोड़ना चाहिये।

दीमक और जमीन के अन्य कीड़ों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व जुताई के समय क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर खेत में बिखेर कर जुताई करनी चाहिये।

बीज की मात्रा एवं उपचार – एक हैक्टेयर भूमि हेतु 5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। बुवाई से पहले 2.5 ग्राम मैंकोजेब प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें।

बुवाई – बारानी क्षेत्र में तारामीरा की बुवाई का समय मिट्टी की नमी व तापमान पर निर्भर करता है। नमी की उपलब्धता के आधार पर इसकी बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए। बीज कतारों में बोये एवं कतार से कतार की दूरी 40–45 सेन्टीमीटर रखें।

उर्वरक – फसल में 30 किलोग्राम नत्रजन एवं 15 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हैक्टेयर देना चाहिये। उर्वरकों को बवुाई के समय ही ऊर देना चाहिये। अंतिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से भूमि में मिलावे।

सिंचाई – जहां सिंचाई के साधन उपलब्ध हों, वहां प्रथम सिंचाई 40 से 50 दिन में, फूल आने से पहले करें। तत्पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर दूसरी सिंचाई दाना बनते समय करें।

निराई – गुड़ाई – फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के 20 से 25 दिन बाद निराई करें। यदि पौधों की संख्या अधिक हो तो बुवाई 20–25 दिन बाद अनावश्यक पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 8–10 सेन्टीमीटर कर दें।

फसल संरक्षण

मोयला – मोयला कीट लगते ही मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से फसल पर भुरकाव करें

अथवा मैलाथियान 50 ई सी या मिथाईल डिमेटोन 25 ई सी सवा लीटर या डायमिथोएट 30 ई सी 875 मिलीलीटर या कार्बोरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण ढाई किलोग्राम का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सफेद रोली, झुलसा व तुलासिता – इन रोगों के लक्षण दिखाई देते ही डेढ़ किलो मैन्कोजेब या जाईनेब का पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। यदि प्रकोप ज्यादा हो तो यह छिड़काव 20 दिन के अन्तर पर दोहरायें।

फसल की कटाई – फसल में जब पत्ते झड़ जाये और फलियां पीली पड़ने लगे तो फसल काट लेनी चाहिये अन्यथा कटाई में देरी होने पर दाने खेत में झड़ जाने की आशंका रहती है।

जैविक नियंत्रण अपनायें, पर्यावरण बचायें,
जैविक खेती अपनाएं, समृद्धि खुशहाली पायें।